



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

दिनांक

पृष्ठ संख्या

कॉलम

१२ - ११ - २४

३

५ - ४

The Tribune

19 suggestions adopted for rabi crop during agriculture officers' workshop at HAU

TRIBUNE NEWS SERVICE

HISAR, NOVEMBER 21

During the two-day state-level agriculture officers' workshop held at Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University, 19 new recommendations were adopted for farmers of rabi crop. The workshop concluded here on Thursday.

Vice-Chancellor Prof BR Kamboj was the chief guest during the concluding session of this workshop. The agriculture officers from across the state and the scientists of HAU discussed in detail about the overall recommendations of rabi crop, highlighting their technical aspects.

Prof Kamboj said 19 recommendations had been accepted in the workshop, which included one for wheat crop, two for spring maize, one for lentils, one for fodder oats and one for medicinal crop, bakla. Farmers would benefit from these recommendations, which were made jointly by the scientists of HAU and the



Participants during the workshop at Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University in Hisar.

officials of the department of agriculture and farmers welfare in the workshop, he said.

The VC said the agriculture-related recommendations given in this workshop would give further impetus to the work being done by the Central and state governments to increase the income of farmers. The VC called upon the scientists to understand the problems of small landholding farmers properly and con-

duct research on the solution to those problems.

The 19 recommendations include WH 1402, wheat variety, for drought tolerance and suitable for early sowing. The average yield of WH 1402 is 20.1 quintals per acre. This variety is highly disease-resistant and is of excellent quality. Besides, a single cross hybrid variety of maize (MH 225) with yellow grains and medium duration that gets

ready for harvest in 115-120 days in spring. This variety has been found to be resistant to major diseases and pests of maize at the national level and has an average yield of 36-38 quintals per acre.

Additional Director of Agriculture and Farmers Welfare Department Dr RS Solanki, along with the scientists of the university and officers of the department, was present on the occasion.



Dignitaries during the workshop at Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University in Hisar on Thursday. TRIBUNE PHOTO



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	२२-११-२५	६	७-८

THE TIMES OF INDIA

INDIA'S LARGEST ENGLISH NEWSPAPER | To subscribe call 1800 1200 004 or visit subscribe.timesofindia.com

19 proposals to help farmers approved

Kumar Mukesh | TNN

Hisar: A two-day state level agriculture officer workshop held at Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University has concluded on Thursday. HAU vice chancellor Professor B. R. Kamboj was the chief guest during the concluding session of the workshop. In this workshop, agriculture officers from across the state and scientists of HAU University discussed in detail about the overall recommendations of Rabi crops, and discussed other important technical aspects.

Prof Kamboj said that 19

recommendations have been accepted in this workshop which include one on wheat, two on spring maize, one on lentils, one on fodder oats and one on medicinal crop Bakla. The agriculture related recommendations given in this workshop will give further impetus to the work being done by the central + and state government to increase the income of farmers. The vice chancellor called upon the scientists to first understand the problems of small landholding farmers properly, and then do research on the solution of those problems.



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,

हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

सम्पादक पत्र का नाम
रैन के मास्टर

दिनांक
२२-११-२५

पृष्ठ संख्या
३

कॉलम
७-८

कृषि अधिकारी कार्यशाला में 19 सिफारिशों हुई स्वीकृत एचएयू में दो दिवसीय राज्य स्तरीय कार्यशाला हुई



कार्यशाला में वीथी प्रो. बीआर काम्बोज व अन्य अधिकारी।

भारकर नगर | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि कॉलेज के सभागार में आयोजित दो दिवसीय राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला का सम्पन्न हुआ। इसमें मुख्य अतिथि एचएयू के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज रहे। इस कार्यशाला में प्रदेशभर के कृषि अधिकारियों और एचएयू के वैज्ञानिकों ने बीच फसलों की समग्र सिफारिशों के बारे में चर्चा की तथा कई महत्वपूर्ण तकनीकी पहलुओं पर विचार-विमर्श किया गया।

कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि इस कार्यशाला में 19 सिफारिशों स्वीकृत की गई हैं, जिनमें एक गेहूँ दो बसंत कालीन मक्का, एक मसर, एक चारा जई की एवं

एक औषधीय फसल बाला के अलावा गर्मी के मौसम में मक्का को चारों की फसल के रूप में उगाने हेतु समग्र सिफारिश, धान-गेहूँ फसल चक्र में पराली प्रबंधन, गवे की फसल में चोटी बेदक व कंसुआ कीट की रोकथान तथा एकीकृत कृषि प्रणाली हेतु फसल चक्र भी शामिल हैं। कार्यशाला में हक्कियि के वैज्ञानिकों एवं कृषि तथा किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त रूप से की गई। इन सिफारिशों से किसानों को फायदा होगा।

कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अतिरिक्त निदेशक डॉ. आर.एस. सोलंकी, डॉ. रमेश वर्मा, डॉ. एचएस. सहारण सहित विविध के वैज्ञानिक एवं कृषि तथा किसान कल्याण विभाग के अधिकारी मौजूद रहे।

इस कार्यशाला में ये सिफारिशों स्वीकृत हुई

- डब्ल्यू एच 1402: गेहूँ की यह बौनी किस्म सूखा सहनशील एवं अग्रीती बिजाई के लिए उपयुक्त है। डब्ल्यू एच 1402 की औसत पैदावार

20.1 विवरण प्रति एकड़ व
उत्पादन क्षमता 27.2 विवरण प्रति एकड़ है। यह किस्म अत्यंत रोगरोधी है और गुणवत्ता में उत्तम है।

- आईएमएच 225: यह मक्का की पीले दाने व मध्यम अवधि वाली एकल संकर किस्म है जो बसंत ऋतु में 115-120 दिन में पककर तैयार होती है। यह किस्म राष्ट्रीय स्तर पर मक्का की मुख्य बीमारियों व कीटों के अवरोधी व मध्यम अवरोधी है। इसकी औसत पैदावार 36-38 विवरण प्रति एकड़ है।

- आईएमएच 226: यह मक्का की हल्की नारंगी दाने व मध्यम अवधि वाली एकल संकर किस्म है जो बसंत ऋतु में 115-120 दिन में पककर तैयार होती है। यह मुख्य

- बीमारियों व कीटों के अवरोधी व मध्यम अवरोधी पाई है। इसकी औसत पैदावार 34-38 विवरण प्रति एकड़ है।

- एलएच 17-19: मसूर की इस छोटे दाने वाली किस्म भारत के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में काशत के लिए अनुमोदित किया है। मध्यम अवधि वाली यह किस्म 6.0-6.5 विवरण प्रति एकड़ की औसत पैदावार देती है।

- आर.एच. 1975: इस किस्म की सिफारिश जम्मू, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली एवं उत्तरी राजस्थान के सिंचित क्षेत्रों में समय पर बिजाई के लिए की है। यह किस्म 145 दिन में पक कर 10.5-11.5 विवरण प्रति एकड़ औसत पैदावार देती है। इसमें तेल की औसत मात्रा 39.3 प्रतिशत है।

- एच एफ ओ 906: एक कटाई वाली चारा जई की इस किस्म की हरियाणा के लिए सिफारिश की है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

सम्माचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
२१ नवंबर २०११	२२-११२५	५	१-६

राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला में 19 सिफारिशों हुई स्वीकृत : कुलपति



वौधरी वरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के सभागार में कृषि अधिकारी कार्यशाला में संबोधित करते कुलपति प्रोफेसर वीआर कालोज व साथ में उपसंचार डा. आरएस सोलंकी व अन्य। जानकारी

जानकारी संवादावाना • **हिसार:** सिफारिशें स्वीकृत की गई हैं। इसमें एक गेहूं, दो बरसत कालीन मक्का, विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय एक मसर, एक चारा जई को एवं के सभागार में आयोजित दो दिवसीय एक औषधीय फसल बाकला के अलावा गर्मी के मौसम में मक्का को चारे की फसल के रूप में उड़ाने हेतु समग्र सिफारिश, धान-गेहूं, फसल चक्र में पराली प्रबधन, गने की कृषि अधिकारियों और हक्कुवि के वैज्ञानिकों की तरफ से रबी फसलों की समग्र सिफारिशों के बारे में चर्चा की गई तथा कई महत्वपूर्ण तकनीकी पहलुओं पर विचार विमर्श किया गया।

कुलपति प्रो. वीआर कालोज ने कहा कि इस कार्यशाला में 19

में दी गई कृषि से संबंधित सिफारिशों से केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा किसानों की आय बढ़ाने के लिए किए जा रहे कार्यों को और गति मिलेगी। कुलपति ने वैज्ञानिकों से आड्हान किया कि वे कम जोत के किसानों की समस्या को पहले अच्छे ढंग से समझे, उसके बाद उन समस्या के निवारण पर शोध करें। इस अवसर पर कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अतिरिक्त निदेशक डा. आरएस सोलंकी, डा. रमेश वर्मा, डा. एचएस सहारण सहित विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक एवं कृषि तथा किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों की तरफ से संतुक्त रूप से की गई इन सिफारिशों से किसानों को फायदा होगा।

उन्होंने बताया कि इस कार्यशाला

कृषि महाविद्यालय के सभागार में आयोजित कार्यशाला में इन सिफारिशों को मिली स्वीकृत

- डल्पूच 1402 गेहूं की यह बीमी किसम सूखा सहनशील एवं अग्रीति बिजाई के लिए उपयुक्त है। डल्पूच 1402 की ओसत पैदावार 20.1 विवर्टल प्रति एकड़ व उत्पादन क्षमता 27.2 विवर्टल प्रति एकड़ है। यह किसम अत्यंत रोगरोधी है और गुणवत्ता में उत्तम है।
- आइएमएच 225 : यह मक्का की पीले दाने व मध्यम अवधि बाली एकल सरक किसम है जो बरसत ऋतु में 115-120 दिन में पक तेरायर हो जाती है। यह किसम राशीय तर पर मक्का की मुख्य विभागियों व कीटों के अवरोधी व मध्यम अवरोधी पाइ गई है। इसकी ओसत पैदावार 36-38 विवर्टल प्रति एकड़ है।
- आइएमएच 226 : यह मक्का की हल्की नारीयों दाने व मध्यम अवधि बाली के अतिरिक्त निदेशक डा. आरएस सोलंकी, डा. रमेश वर्मा, डा. एचएस सहारण सहित विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक एवं कृषि तथा किसान कल्याण विभाग के अधिकारीयों की तरफ से किसान कल्याण विभाग के अधिकारी मौजूद रहे। मंच का संचालन डा. सुरेन ढांडा ने किया।
- 34-38 विवर्टल प्रति एकड़ है। इसमें प्रोटीन की मात्रा 28 प्रतिशत होती है। इसकी खेती हरियाणा के सिंचित और अर्ध सिंचित क्षेत्रों में काश्त के लिए अनुमोदित किया गया है। मध्यम अवधि बाली यह किसम 6.0 - 6.5 विवर्टल प्रति एकड़ की ओसत पैदावार देती है।
- आरएच 1975 : इस किसम की सिफारिश जम्मू पालाब, हरियाणा, दिल्ली एवं उत्तरी राज्यों के सिंचित क्षेत्रों में समय पर बिजाई के लिए की गई है। यह किसम 145 दिनों में पक कर 10.5-11.5 विवर्टल प्रति एकड़ ओसत पैदावार देती है। इस किसम में तेल की ओसत मात्रा 39.3 प्रतिशत है।
- एचएचओ 906 : एक कटाई बाली चारा जई की इस किसम की हरियाणा के लिए सिफारिश की गई है। यह किसम 262.00 विवर्टल प्रति एकड़ हरे घारे की पैदावार देती है।
- हरियाणा बाकला 3 : इस किसम की ओसत उपज 9.5 विवर्टल प्रति एकड़ है तथा इसकी अधिकतम उपज 20

विवर्टल प्रति एकड़ है इसमें प्रोटीन की मात्रा 28 प्रतिशत होती है। इसकी खेती हरियाणा के सिंचित और अर्ध सिंचित क्षेत्रों में की जा सकती है।

• धान-गेहूं फसल बाली में पराली प्रबधन हेतु, दस्त मेनेजर्मेंट सिरटम लगे हुए कंबाइन हार्पर्टर द्वारा धान की कटाई के उत्तरांत पराली की मिट्टी में मिलाने के साथ-साथ गेहूं की बिजाई के लिए सुपर सीडर का उपयोग करें। इस मसलन से गेहूं की बिजाई करने पर परायरात विधि की तुलना में 43 प्रतिशत इंचन, 36 प्रतिशत श्रम तथा 40 प्रतिशत बिजाई लागत की बहत होती है।

• गने की फसल में बोटी बेंदक व कंसुआ कीट की रोकथाम के लिए अप्रैल अंत से मई के प्रथम सप्ताह तक दबोरेनटाइनलीपरोल 18.5 प्रतिशत एस री (कारोजन / सीटीजन) 150 मि. ली. प्रति एकड़ की दर से 400 लीटर्स पानी में मिलाकर फीट बाले पांप से मोटा फलवारा बनाकर फसल के जड़ क्षेत्र में डालकर हल्की सिराई करें।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
उम्मत उजाता	२२-११-२५	२	२-४

गेहूं की डब्ल्यूएच 1402, मवका की आईएमएच 225-226 किस्म की सिफारिश

एचएयू में आयोजित राज्यस्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला में 19 सिफारिशों हुई स्वीकृत, सरसों की किस्म आरएच 1975, चारा जई की एचएफओ 906 भी शामिल

माई सिटी रिपोर्टर



एचएयू में आयोजित कार्यशाला में मौजूद वीसी प्रो. औसत कांबोज व अन्य। छोटा: संख्या

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के सभागार में आयोजित यो दिवसीय राज्यस्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला में 19 सिफारिशों स्वीकृत की गई हैं। इसमें गेहूं, मवका, मसूर, चारा जई, औषधीय फसल बाजला, गर्मी के मोसल में मवका की समग्र सिफारिश है।

इसके अलावा धन-गेहूं फसल बक्र में पालन प्रबोधन, गनन की फसल में चोटी बेदक व कंसुआ कीटों की गोकथाम और पक्कीकृत कृषि प्रणाली के लिए फसल बक्र को लेकर भी सिफारिश की गई है।

डब्ल्यूएच 1402 गेहूं की बीजों किस्म में आयोजित विजाइ निकाले के लिए डम्पुक्त है। जिसको औसत पैदावार 20.1 विवरण प्रति एकड़ है। यह किस्म

कार्यशाला के समाप्त मोके पर मुख्य अतिविधि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. औसत कांबोज ने कहा कि यो दिवसीय किसानों को समझा को पहले अच्छे दिन से समझें। उसके बाद उन समझा के कार्यशाला से अच्छे निकाल निकाले हैं।

एचएयू के वैज्ञानिकों एवं कृषि और

किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों

द्वारा समुक्त रूप से की गई इन सिफारिशों

से किसानों को फायदा होगा।

इन सिफारिशों से किसानों की आप

बढ़ाव के लिए किए जा रहे कार्यों को और

डब्ल्यूएच 1402 : गेहूं की बीजों किस्म मूल्य महजशाला एवं अगती विजाइ के लिए उपयुक्त, औसत पैदावार 20.1 विवरण प्रति एकड़।

2. आईएमएच 225 : औसत पैदावार 36-38 विवरण प्रति एकड़, यह मवका की पीले दाने बाली एकल संकर किस्म 115-120 दिन में तैयार होती है। बागारियों व कीटों के अवरोधी।

3. आईएमएच 226 : हल्ली नारीय दाने बाली एकल संकर किस्म की यो मस्तका 115-120 दिन में पकाकर तैयार होती है। बागारियों व कीटों के अवरोधी, औसत पैदावार 34-38 विवरण प्रति एकड़।

4. एलएच 17-19 : मसूर की इस

छोटे दाने बाली किस्म भारत के

कार्यशाला में स्वीकृत हुई सिफारिशें

उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में कालस के लिए अनुपायित विकास गम है। 6.0 - 6.5

विवरण प्रति एकड़ की औसत पैदावार।

5. आरएच 1975 : यम्, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उत्तरी एज़ल्यून के सिविल क्षेत्रों के लिए सरसों की गह किस्म 145 दिनों में पक कर 10.5-11.5 विवरण प्रति एकड़ औसत पैदावार देती है। तेल की ओसान मात्रा 39.3 प्रतिशत है।

6. एच एफ ओ 906 : एक कटाई बाली चारा जई की इस किस्म की हरियाणा के लिए सिफारिश की गई है। यह किस्म 262.0 विवरण प्रति एकड़ हरे चारे की पैदावार देती है।

7. हरियाणा बाकला 3 : औसत उत्तर 9.5 विवरण प्रति एकड़, प्रोटीन की मात्रा 28 प्रतिशत। हरियाणा के सिविल और अर्थ स्विचित क्षेत्रों के लिए अनुभावित।

8. धन-गेहूं फसल बक्र में पराली प्रबोधन के लिए, स्ट्रॉमेजमेट सिस्टम लगे हुए केबिन हॉवरस्टर हारा धान की कटाई के उपरांत पराली को बिस्टी में लियाने के साथ-साथ गेहूं की विजाइ के लिए सुपर सोडर का डप्पय करो। इस मरीने से गेहूं की विजाइ करने पर परायगत विधि की तुलना में 43 प्रतिशत है। 36 प्रतिशत धन और 40 प्रतिशत विजाइ लागत की बचत होती है।

9. माने की फसल में जीटी बेट्टा व कंसुआ कीट की रोकथाम के लिए अप्रैल अंत से मई के प्रमाण सालाह तक कलोनट्रायिटोप्टोल 18.5 प्रतिशत एस सी (कोर्गन/वीटीजन) 150 मिली. प्रति एकड़ की दर से 400 लीटर यानी में विवरकर पीले बाले पर से मौटा फल्याग बनाकर फसल के चाड़ बीत में ढालकर हल्की सिंचाई करो।



चौधारी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि. भूमि	२२-१०-२५	११	६-८

राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला में 19 सिफारिशों स्वीकृत हुई

हरिगूण न्यूज ► हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के सभागर में आयोजित दो दिवसीय राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला का समापन हुआ, जिसमें मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज रहे। इस कार्यशाला में प्रदेशभर के कृषि अधिकारियों और हक्कीवि के वैज्ञानिकों द्वारा रबी फसलों की समग्र सिफारिशों के बारे में विस्तृत चर्चा की गई तथा कई महत्वपूर्ण तकनीकी पहलुओं पर विचार विमर्श किया गया। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि इस कार्यशाला में 19 सिफारिशों स्वीकृत की गई हैं जिनमें एक गेहूँ दो बसंत कालीन मक्का, एक मसर, एक चारा जई की एवं एक औषधीय फसल बाकला के अलावा गर्मी के मौसम में मक्का को चारे की फसल के रूप में उगाने के लिए समग्र सिफारिश, धान-गेहूँ फसल चक्र में पराली प्रबंधन, गन्ने की फसल में चोटी बैदक व कंसुआ कीट की रोकथाम तथा एकीकृत कृषि प्रणाली हेतु फसल चक्र भी शामिल हैं। कार्यशाला में हक्कीवि के वैज्ञानिकों



हिसार। कार्यशाला को संबोधित करते कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज।

फोटो : हरिभूमि

एवं कृषि तथा किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त रूप से की गई इन सिफारिशों से किसानों को फायदा होगा। उन्होंने बताया कि इस कार्यशाला में दी गई कृषि से संबंधित सिफारिशों से केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा किसानों की आय बढ़ाने के लिए किए जा रहे कार्यों को और गति मिलेंगी। इस अवसर पर कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अतिरिक्त निदेशक डॉ. आर.एस. सोलंकी, डॉ. रमेश वर्मा, डॉ. पच्चास सहारण सहित विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक एवं कृषि तथा किसान कल्याण विभाग के अधिकारी मौजूद रहे। मंच का संचालन डॉ. सुनील ढांडा ने किया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब के सभी	२२-११-२५	३	३-७-

हक्कुवि में आयोजित दो दिवसीय कार्यशाला संपन्न



कार्यशाला में उपस्थित अधिकारीण।

हिसार, 21 नवम्बर (राठी) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के सभागार में आयोजित दो दिवसीय राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला में 19 सिफारिशों स्वीकृत की गई हैं, जिनमें एक गेहूं दो बसंत कालीन मवका, एक मसर, एक चारा जई की एवं एक औषधीय फसल बाकलों के अलावा गर्मी के मौसम में मक्का को चारे की फसल के रूप में उगाने हेतु समग्र सिफारिश, धान-गेहूं फसल चक्र में पराली प्रबंधन, गर्मी की फसल में चोटी बेदक व कंसुआ कीट की रोकथाम तथा एकत्र कृषि प्रणाली हेतु फसल चक्र भी शामिल हैं।

ज्ञात रहे कि दो दिवसीय यह कार्यशाला आज संपन्न हुई। इस कार्यशाला में मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर.काम्बोज रहे। इस कार्यशाला में प्रदेशभर के कृषि अधिकारियों और हक्कुवि के वैज्ञानिकों द्वारा गर्मी फसलों की समग्र सिफारिशों के बारे में विस्तृत चर्चा की गई तथा कई महत्वपूर्ण तकनीकी पहलुओं पर विचार विमर्श किया गया। इस अवसर पर कृषि एवं किसान कल्याण,

विभाग के अतिरिक्त निदेशक डॉ. आर.एस. सोलंकी, डॉ. रमेश वर्मा, डॉ. एच.एस. सहारण सहित विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक एवं कृषि तथा किसान कल्याण विभाग के अधिकारी मौजूद रहे।

कार्यशाला में ये की गई प्रमुख सिफारिशें

-डल्ल्यू.एच 1402 गेहूं की यह दौनी किस्म सूखा सहनशील एवं अगती बिजाई के लिए उपयुक्त है। डल्ल्यू.एच 1402 की ओसत पैदावार 20.1 किंटल प्रति एकड़ व उत्पादन क्षमता 27.2 किंटल प्रति एकड़ है। यह किस्म अत्यंत रोगरोधी है और गुणवत्ता में उत्तम है।

-आई.एम.एच. 225 : यह मक्का की पीले दाने व मध्यम अवधि वाली एकल संकर किस्म है जो बसंत गतु में 115-120 दिन में पक कर तैयार हो जाती है। यह किस्म राजीय स्तर पर मक्का की मुख्य बिमारियों व कीटों के अवरोधी व मध्यम अवरोधी पाई गई है। इसकी ओसत पैदावार 36-38 किंटल प्रति एकड़ है।

-आई.एम.एच. 226 : यह मक्का की हल्की नारंगी दाने व मध्यम अवधि वाली एकल संकर किस्म है जो बसंत ऋतु में 115-120 दिन में पक कर तैयार हो जाती है। यह किस्म मुख्य बीमारियों व कीटों के अवरोधी व मध्यम अवरोधी पाई गई है। इसकी ओसत पैदावार 34-38 किंटल प्रति एकड़ है।

-एलएच 17-19 : मसूर की इस छोटे दाने वाली किस्म भारत के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में काशत के लिए अनुमोदित किया गया है। मध्यम अवधि वाली यह किस्म 6.0-6.5 किंटल प्रति एकड़ की ओसत पैदावार देती है।

-आर.एच. 1975 : इस किस्म की सिफारिश जम्मू पंजाब, हरियाणा, दिल्ली एवं उत्तरी राजस्थान के सिंचित क्षेत्रों में समय पर बिजाई के लिए की गई है। यह किस्म 145 दिनों में पक कर 10.5-11.5 किंटल प्रति एकड़ ओसत पैदावार देती है। इस किस्म में तेल की ओसत मात्रा 39.3 प्रतिशत है।

-एच.एफ.ओ 906 : एक कटाई वाली चारा जई की इस किस्म की हरियाणा के लिए सिफारिश की गई है। यह किस्म 262.00 किंटल प्रति एकड़ हरे चारे की पैदावार देती है।

-हरियाणा बाकला 3 : इस किस्म की ओसत उपज 9.5 किंटल प्रति एकड़ है तथा इसकी अधिकतम उपज 20 किंटल प्रति एकड़ है इसमें प्रोटीन की मात्रा 28 प्रतिशत होती है। इसकी खेती हरियाणा के सिंचित और अर्ध सिंचित क्षेत्रों में की जा सकती है।

-धान-गेहूं फसल चक्र में पराली प्रबंधन हेतु स्ट्रॉमेजेपेट सिस्टम लगे हुए कंबाइन हावेस्टर द्वारा धान की कटाई के उपरान्त पराली की

मिट्टी में मिलाने के साथ-साथ गेहूं की बिजाई हेतु सुपर सीडर का उपयोग करें। इस मशीन से गेहूं की बिजाई करने पर परम्परागत विधि की तुलना में 43 प्रतिशत ईंधन, 36 प्रतिशत श्रम तथा 40 प्रतिशत बिजाई लागत की बहत होती है।

-गेहूं की फसल में चोटी बेदक व कंसुआ कीट की रोकथाम के लिए आप्रैल अंत से मई के प्रथम सप्ताह तक वलोरेनट्रानिलीपरोल 18.5 प्रतिशत एस सी (कोराजन / सीटीजन) 150 मि.ली.प्रति एकड़ की दर से 400 लीटर पानी में मिलाकर पीट वाले पें से मोटा फुवारा बनाकर फसल के जड़ क्षेत्र में डालकर हल्की सियाई करें।

-गर्मी के मौसम में मक्का को चारे की फसल के रूप में उगाने हेतु समग्र सिफारिश।

-एकीकृत कृषि प्रणाली की एक हेवेटेयर मॉडल पर शोध के अधार पर मूग-गेहूं (देरी) + सरसों (10 : 2), मछा+लोबिया-जई-मीठी सृडान घास एवं मंग-सरसों-मंग फसल बढ़ी की सिफारिश की गई।

कार्यशाला में हक्कुवि के वैज्ञानिकों एवं कृषि तथा किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों द्वारा गर्मी संयुक्त रूप से की गई इन सिफारिशों से किसानों को फायदा होगा। उन्होंने बताया कि इस कार्यशाला में दी गई कृषि से संबंधित सिफारिशों से केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा किसानों की आय बढ़ाने के लिए किए जा रहे कार्यों को और गति मिलेगी।

प्रो. बी.आर.काम्बोज,
कुलपति हक्कुवि



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

सुमाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
न्यून कृषिव्यून	२२-११-२५	९	३-५

राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला में 19 सिफारिशों स्वीकृत

हिसार, 21 नवंबर (हजार)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के सभागार में आयोजित दो दिवसीय राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला के अंतिम एवं दूसरे दिन बृहस्पतिवार को 19 सिफारिशों स्वीकृत की गई हैं जिनमें एक गेहूं, दो बसंत कालीन मक्का, एक मसर, एक चारा जई की एवं एक औषधीय फसल बाकला को उगाने की सिफारिशों भी शामिल हैं। इनके अलावा गर्मी के मौसम में मक्का को चारे की फसल के रूप में

उगाने हेतु समग्र सिफारिश, धान-गेहूं फसल चक्र में पराली प्रबंधन, गन्ने की फसल में चोटी बेदक व कंसुआ कीट की रोकथाम तथा एकीकृत कृषि प्रणाली हेतु फसल चक्र भी इन सिफारिशों में शामिल किया गया है। कार्यशाला में मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज रहे इसमें प्रदेशभर के कृषि अधिकारियों और हक्कीवि के वैज्ञानिकों द्वारा रबी फसलों की समग्र सिफारिशों के बारे में विस्तृत चर्चा की गई तथा कई महत्वपूर्ण तकनीकी पहलुओं पर विचार विमर्श किया गया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
२१ नवंबर २०२४	22.11.2024	--	--

राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला में 19 सिफारिशों हुई स्वीकृत : कुलपति



कार्यक्रम में मौजूद विश्वविद्यालय के अधिकारी एवं वैज्ञानिक।

मावेसी न्यूज/मुरारेंड्र सोद्धी हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविभाग के सभागार में आयोजित दो दिवसीय राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला का समापन हुआ। जिसमें मुख्य अधिकारी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर काम्बोज रहे। इस कार्यशाला में प्रदेशभर के कृषि अधिकारियों और हक्कीव के वैज्ञानिकों द्वारा रबी फसलों की समग्र सिफारिशों के बारे में विस्तृत चर्चा की गई तथा कई महत्वपूर्ण तकनीकी पहलुओं पर विचार विमर्श किया गया। कुलपति प्रो. बी.आर काम्बोज ने कहा कि इस कार्यशाला में 19 सिफारिशों स्वीकृत की गई है जिसमें एक गेहू़ दो बसंत कालीन मक्का, एक मसर, एक चारा जई की एवं एक औषधीय फसल व्याकला के अलावा गर्मी के मौसम में मक्का को चारे की फसल के रूप में लाने हेतु समग्र सिफारिश, धान-गेहू़ फसल चक्र में पराली प्रब्रह्मन, गन्ने की फसल में चौटी बेदक व कंसुआ कीट की रोकथाम तथा एकीकृत कृषि प्रणाली हेतु फसल चक्र भी शामिल है। कार्यशाला में हक्कीव के वैज्ञानिकों एवं कृषि तथा किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों द्वारा संवुल रूप से की गई इन सिफारिशों से किसानों को फायदा होगा। इस अवसर पर कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अधिकारी निदेशक डॉ. आर.एस. सोलंकी, डॉ. रमेश बर्मा, डॉ. एच.एस. सहारण सहित विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक एवं कृषि तथा किसान कल्याण विभाग के अधिकारी मौजूद रहे। मंच का संचालन डॉ. सुनील छांडा ने किया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
जहामारी न्यूज़	21.11.2024	--	--

कार्यशाला कम जोत के किसानों की समस्या को पहले अच्छे ढंग से समझने के लिए स्वीकृत अधिकारी कार्यशाला में 19 सिफारिशें हुई : प्रो. कांबोज

⇒ हक्किय में दो दिवसीय
राज्य स्तरीय कृषि
अधिकारी कार्यशाला
का समापन हआ

卷之三

हिमार। चौथी चरण मिहे लक्ष्मियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि विश्वविद्यालय के सभागांगा में अध्यापिता हो दिवसीय राज्य सत्रोंपर कृषि अधिकारी कार्यशाला का समापन हुआ, जिसमें मुख्य अधिकारी विश्वविद्यालय के कृत्यपत्रिएँ, वी. और कार्यालय रहे।

इस कार्यक्रमाला में पृष्ठेश्वर के अधिक अधिकारियों और दलपुत्र के केन्द्रीयिकों द्वारा एवं प्रशासनों की सम्मुख सिफारिशों के बारे में विचारना वर्तमान की एक तथा कई भवित्वपूर्ण तकनीकी पहलुओं पर विचार विचार किया जाय। कल्पनाएँ ग्रो-



बी आर शास्त्रीज ने कहा कि हम कार्यशाला में 19 विफारिशों स्वीकृत जी गई हैं जिनमें एक मैट्रिक्स दो वस्तुओं कालीन वस्तु, एक ग्राह, एक चारा जई की एवं एक औपचारिक प्रस्तुत वस्तुओं के अलावा उनमें से भी वस्तु में वस्तु की चारी जी फ्रमाल के रूप में आने हेतु मध्य विफारिश, धन-गेहूं प्रस्तुत चक्र में प्राणी प्रबोधन, गन्ने की फ्रमाल में चोटी बैठक व कालुओं कोट की रोकथाम तथा एकीकृत कृषि प्रणाली हेतु प्रस्तुत चक्र भी शामिल है। कार्यशाला में

हमें ये व्यापारियों गई थीं कि तथा
विस्तार करना विभाग के
अधिकारियों द्वारा संयुक्त रूप से
की गई इन मिलिशियों से किमानों
को फायदा होगा।

कूलपति में वैज्ञानिकों द्वारा अध्ययन किया कि वे कम गोत के किसानों की समस्या को पहुँचे

अधिक दूर से समझे, उसके कारण उन सारांशों के निवारण पर ध्येय कहे। इस अवसर पर कृपि एवं विभान कल्याण विभाग के अतिरिक्त निदेशक डॉ. अमरज्ञ. सोलंकी, डॉ. रमेश चर्मा, डॉ. एश्वर्जुन सहारण आहित विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक एवं कृषि तथा विभान कल्याण विभाग के अधिकारी घैबद हो।

मध्य का संवादन डॉ. मुनोज
द्वारा ने किया। इस कार्यक्रम में
19 गिरफ्तारी स्वीकृत हुई जिनमें
प्रमुख निपटाताधिकार है।

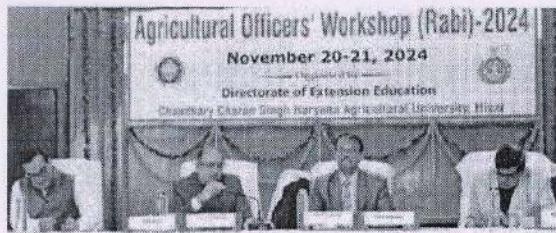


चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

सम्बन्धित पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला में 19 सिफारिशों हुई स्वीकृतः प्रो. बी.आर. काम्बोज	21.11.2024	--	--

राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला में 19 सिफारिशों हुई स्वीकृतः प्रो. बी.आर. काम्बोज

बृहवि में दो दिवसीय राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला का समापन हुआ।



कृतिपति प्रो. बी.आर. काम्बोज कार्यशाला का समोप्तित करते हुए।

मिट्टीपल्स न्यूज़, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के सभागार में आयोजित दो दिवसीय राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला का समाप्त हुआ, जिसमें मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज रहे। इस कार्यशाला में प्रदेशपर के कृषि अधिकारियों और हक्कीय के वैज्ञानिकों द्वारा स्वीकृत कृषि अधिकारियों और तकनीकी पहलुओं पर विचार विमर्श तकनीकी पहलुओं पर विचार विमर्श

किया गया।

कूलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि इस कार्यशाला में 19 सिफारिशों स्वीकृत की गई हैं जिनमें एक गेहू़ दो बरसत कालीन मक्का, एक मसर, एक चारा जई की एवं एक औषधीय फसल बाकला के अलावा गर्मी के गोमयम में मक्का को चारे की फसल के रूप में उगाने हेतु समग्र सिपारिश, धान-गेहू़ फसल चक्र में पराली प्रबन्धन, गर्जे की फसल में चारों बेदक व कम्बुआ कोट की रोकथाम तथा एकीकृत कृषि प्रणाली हेतु फसल चक्र भी शामिल हैं।

इस कार्यशाला में 19 सिफारिशों स्वीकृत हुई जिनमें मुख्य निम्नलिखित हैं:

- उत्तर एवं 1402 गेहू़ की यह बैली किस्त सूखा सद्व्यापील एवं अंगोत्त बिंगाई के लिए उपयुक्त है।
- अझाइयाए 225: यह गवाका की पीले दाने व मध्यान अवधि गवाका काल सकर किस्त है जो बरसत ऋतु में 115-120 दिन में पक जाएगा तो यहाँ से जाती है।
- आझाइयाए 226: यह गवाका की हल्की नारंगी दाने व मध्यान अवधि गवाका काल सकर किस्त है जो बरसत ऋतु में 115-120 दिन में पकजाए तो यहाँ से जाती है।
- एलए 17-19: गर्मी की इस छोटे दाने गवाका किस्त गारत के उत्तर-पश्चिमी थेटों में काष्ठ के लिए अनुमतिदात किया गया है।
- आर. एच. 1975: इस किस्त की सिपारिश जग्ज, पाजार, हरियाणा, दिल्ली एवं उत्तरी राजस्थान के सिवित थेटों में सर्वाधिक विंगाई के लिए गई है। यह किस्त 145 दिनों में पक जाएगी तो यहाँ से जाती है।
- 10.5-11.5 विटल प्रति एकड़ औरत घोटाला देती है। इस किस्त में तेल की औसत मात्रा 39.3 प्रतिशत है।
- एच एफ ओ 906: एक कर्टाई गारी यार जई की इस किस्त की डिरियाणा के लिए सिपारिश नींगई है। यह किस्त 262.00 किलो प्रति एकड़ हरे घारे की घोटाला देती है।
- हरियाणा बाकला 3-इस किस्त की औसत उत्तर एवं 9.5 किलो प्रति

कार्यशाला में हक्कीय के वैज्ञानिकों एवं कृषि तथा किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों द्वारा संमुक्त रूप से की गई

इन सिफारिशों से किसानों को फायदा होगा। उन्होंने बताया कि इस कार्यशाला में दी गई कृषि से संबंधित सिफारिशों

से केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा किसानों की आय बढ़ाने के लिए किए जा रहे कार्यों को और गति मिलेगी।